नवभारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

कांग्रेस को गंभीर आत्म मंथन की आवश्यकता

हाल ही में संपन्न राज्यसभा चुनावों ने एक बार फिर कांग्रेस की संगठनात्मक कमजोरी और राजनीतिक चुनौतियों को उजागर कर दिया है. बिहार, ओडिशा और हरियाणा जैसे राज्यों में क्रॉस वोटिंग, विधायकों की अनुपस्थिति और रणनीतिक चूक ने न केवल पार्टी की विश्वसनीयता पर प्रश्नचिह्न लगाया है, बल्कि विपक्षी एकता की वास्तविक स्थिति भी सामने रख दी है. यह स्थिति कांग्रेस के लिए केवल एक चुनावी हार नहीं, बल्कि एक गहरी चेतावनी है. 2024 के लोकसभा चुनाव में कांग्रेस ने 52 से बढ़कर 99 सीटें हासिल की थीं, जिससे पार्टी के भीतर एक नई उम्मीद जगी थी. ऐसा लगा कि लंबे समय से चले आ रहे राजनीतिक अवसान का दौर समाप्त हो रहा है. लेकिन इसके बाद हरियाणा, महाराष्ट्र, बिहार और दिल्ली के विधानसभा चुनावों में प्रदर्शन ने इस धारणा को कमजोर कर दिया. अब राज्यसभा चुनावों में सामने आई घटनाओं ने यह स्पष्ट कर दिया है कि कांग्रेस की समस्या केवल चुनावी नहीं, बल्कि संरचनात्मक है.

ओडिशा में तीन विधायकों द्वारा क्रॉस वोटिंग किया जाना पार्टी अनुशासन पर सीधा प्रहार है. सोफिया फिरदौस, रमेश जेना और दशरथी गोमांगो का पार्टी लाइन से हटकर मतदान करना यह संकेत देता है कि जमीनी स्तर पर नेतृत्व की पकड़ कमजोर हो रही है. बिहार में स्थिति और भी चिंताजनक रही, जहां कांग्रेस और राजद के कई विधायक मतदान के समय अनुपस्थित रहे. परिणामस्वरूप एनडीए ने सभी पांच सीटों पर जीत दर्ज कर ली. यह केवल रणनीतिक विफलता नहीं, बल्कि राजनीतिक इच्छाशक्ति की कमी का भी संकेत है. हरियाणा में कांग्रेस ने अपने विधायकों को शिमला भेजकर क्रॉस वोटिंग रोकने का प्रयास किया, लेकिन इसके बावजूद आरोप-प्रत्यारोप की स्थिति बनी रही. यद्यपि पार्टी एक सीट बचाने में सफल रही, लेकिन इस पूरी प्रक्रिया ने यह दिखाया कि कांग्रेस अभी भी रक्षात्मक राजनीति में उलझी हुई है.

इन घटनाओं का व्यापक विश्लेषण यह बताता है कि कांग्रेस के सामने सबसे बड़ी चुनौती आंतरिक एकजुटता की है. तदर्थवाद और यथास्थितिवाद की राजनीति ने संगठन को कमजोर किया है. निर्णय प्रक्रिया में स्पष्टता का अभाव, नेतृत्व और कार्यकर्ताओं के बीच संवाद की कमी, और क्षेत्रीय नेताओं की उपेक्षा जैसे मुद्दे लगातार पार्टी को नुकसान पहुंचा रहे हैं. यह भी समझना आवश्यक है कि भारत जैसे विशाल लोकतंत्र में एक मजबूत विपक्ष का होना अत्यंत जरूरी है. कांग्रेस, जो कभी स्वतंत्रता आंदोलन की धुरी रही है, यदि स्वयं को पुनर्गठित नहीं करती, तो लोकतांत्रिक संतुलन प्रभावित हो सकता है. भाजपा की चुनावी रणनीति और संगठनात्मक मजबूती के सामने टिके रहने के लिए कांग्रेस को केवल गठबंधन की राजनीति पर निर्भर रहने के बजाय अपने संगठन को जमीनी स्तर पर मजबूत करना होगा.

कांग्रेस के शीर्ष नेतृत्व को अब आत्ममंथन के साथ-साथ ठोस कदम उठाने होंगे. संगठनात्मक ढांचे में सुधार, अनुशासन की सख्ती, और स्थानीय नेतृत्व को सशक्त बनाना समय की मांग है. साथ ही, विचारधारा और कार्यक्रमों की स्पष्टता भी आवश्यक है, ताकि कार्यकर्ताओं और मतदाताओं दोनों के बीच भरोसा पुनर्स्थापित हो सके .कुल मिलाकर राज्यसभा चुनावों के ये नतीजे कांग्रेस के लिए एक अवसर भी हैं. यदि पार्टी इन संकेतों को गंभीरता से लेकर सुधार की दिशा में आगे बढ़ती है, तो वह न केवल अपनी खोई जमीन वापस पा सकती है, बल्कि भारतीय राजनीति में एक प्रभावी विकल्प के रूप में भी उभर सकती है.

विधानसभा चुनावों में हर सत्तारूढ़ पार्टी की परीक्षा

ऐसे समय पर जब समूचा विपक्ष एकजुट होकर मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार के विरुद्ध महाभियोग लाने की तैयारी कर रहा है, ठीक उसी समय देश के मुख्य निर्वाचन आयुक्त ने बंगाल, तमिलनाडु, केरल, असम और पुडुचेरी के विधानसभा चुनावों की घोषणा की. यह विधानसभा चुनाव इसलिए खास हैं, क्योंकि तमिलनाडु को छोड़कर सभी 4 राज्यों में जो सरकारें हैं, वह एक से ज्यादा बार लगातार सत्ता में काबिज सरकारें हैं.

बंगाल में ममता सरकार लगातार 3 बार सत्ता में रहने का कार्यकाल पूरा करके अगर जीतेगी, तो चौथी बार सत्ता में प्रवेश करेगी, जबकि केरल में मौजूदा लेफ्ट गठबंधन सरकार अगर जीती तो तीसरी बार सरकार बनाने के लिए उतरेगी. जबकि असम में एनडीए लगातार तीसरी और पुडुचेरी में दूसरी बार सरकार बनाने की कोशिश करेगी. अकेला तमिलनाडु ही ऐसा राज्य है, जहां मौजूदा डीएमके दूसरी बार सत्ता में आने का सपना देख रही है. इन 5 राज्यों के अलावा इसी समय गोवा, गुजरात, कर्नाटक, महाराष्ट्र और त्रिपुरा की 8 विधानसभा सीटों पर 2 चरणों में उपचुनाव होंगे.

विपक्ष यह संदेश देने की कोशिश कर रहा है कि उसे सत्ता से बेदखल करने के लिए केंद्र सरकार के इशारे पर राष्ट्रीय चुनाव आयोग एसआईआर के माध्यम से इसे अंजाम दे रहा है. एसआईआर के बाद सभी राज्यों में मतदाताओं की संख्या में काफी कमी आई है. बंगाल में मतदाताओं की संख्या 7.34 करोड़ थी. मगर एसआईआर के बाद बंगाल में अब कुल रजिस्टर्ड मतदाता 6.44 करोड़ रह गए हैं. जबकि इनमें 5.2 लाख मतदाता ऐसे हैं जो 2021 में नहीं थे. एसआईआर के बाद बंगाल में तकरीबन 1 करोड़ मतदाता घट गए हैं. ममता बनर्जी के नेतृत्व में समूचा विपक्ष मिलकर मुख्य निर्वाचन आयुक्त ज्ञानेश कुमार के विरुद्ध महाभियोग लाने की कोशिश कर रहा है.

एसआईआर से सभी राज्यों में मतदाता घटे

बंगाल में मतदाताओं की संख्या 7.34 करोड़ थी. मगर एसआईआर के बाद बंगाल में अब कुल रजिस्टर्ड मतदाता 6.44 करोड़ रह गए हैं. जबकि इनमें 5.2 लाख मतदाता ऐसे हैं जो 2021 में नहीं थे. एसआईआर के बाद बंगाल में तकरीबन 1 करोड़ मतदाता घट गए हैं.

बंगाल की ही तरह तमिलनाडु में भी एसआईआर के जरिए प्रदेश सरकार को बदलने की कोशिश की बात हो रही है. तमिलनाडु में भी 2021 में जब चुनाव हुए थे, तो कुल मतदाताओं की संख्या लगभग 6.28 करोड़ थी, जबकि एसआईआर के बाद 60 लाख रजिस्टर्ड मतदाता कम हो गए हैं. अब कुल मतदाता 5.67 करोड़ बचे हैं. इसमें भी 12.51 लाख ऐसे मतदाता हैं जो 2021 में नहीं थे. इस तरह देखा जाए तो तमिलनाडु में भी बड़ी संख्या में मतदाताओं की कमी हुई है. डीएमके सरकार का आरोप है कि उसके पारंपरिक समर्थक मतदाताओं का वोटर लिस्ट से नाम काटकर उसको हराने की कोशिश है. ऐसे ही आरोप केरल में भी लगाए जाने की कोशिश हो रही है, जबकि केरल में कुल मतदाता 5 लाख ही घटे हैं.

असम में एसआईआर नहीं हुआ, इसलिए वहां यह बात नहीं है. जबकि 9.44 लाख मतदाताओं वाले केंद्रशासित प्रदेश पुडुचेरी में भी एसआईआर के बाद से 60 हजार मतदाताओं की संख्या घटी है जबकि 23 हजार मतदाता पहली बार चुनाव में हिस्सा लेंगे. कुल मिलाकर जिन राज्यों में विपक्षी पार्टियां सत्तारूढ़ हैं, वह इस तरह का संदेश देने की कोशिश कर रही हैं कि एसआईआर के जरिए केंद्र सरकार इन्हें सत्ता से बेदखल करना चाहती है.

2024 के लोकसभा चुनावों के बाद सही मायनों में ये पांच राज्य विधानसभा चुनाव होने जा रहे हैं जिनसे पता चलेगा कि देश में समर्थन की बयार सत्ता पक्ष के हित में बह रही है या उसके विरुद्ध. इन चुनावों में सभी सत्तारूढ़ पार्टियों की साख और लोकप्रियता दांव पर है, चाहे वह विपक्षी राजनीतिक पार्टियां हों या केंद्र की सत्ता में मौजूद गठबंधन से रिश्ता रखती हों.

-नरेंद्र शर्मा

दिल्ली डायरी

बिहार कांग्रेस की सुस्ती से राजद का बना खेल बिगड़ गया

प्रवेश कुमार मिश्र

राज्यसभा चुनाव में वोटों का समीकरण महागठबंधन के पक्ष में होने के बावजूद भाजपा ने अपने कुशल रणनीति की बदौलत पांचों सीटों पर जीत हासिल कर ली. चर्चा है कि इस चुनाव को लेकर कांग्रेस पार्टी की ओर से कोई लिखित निर्देश जारी नहीं किया गया था जिसका फायदा उठाकर कांग्रेस के छह में से तीन विधायकों ने वोट नहीं डाला. विधानसभा चुनाव बीतने के पांच माह बाद भी कांग्रेस अपने विधायक दल का नेता चुनने में असमर्थ रही है जिसके कारण न तो पार्टी की ओर से कोई नियम संगत निर्देश दिया गया और न ही मौजूदा विधायकों में से तीन ने पार्टी के मौखिक आदेश का पालन किया. इस खेल के पीछे जितनी सजगता भाजपाई रणनीतिकारों ने दिखाई उससे ज्यादा अनभिज्ञता प्रदेश कांग्रेस नेतृत्व की ओर से दिखाई गई. यहीं हाल उड़िसा में भी देखने को मिला है. एकपक्षीय परिणाम के बाद कांग्रेस की कार्यशैली को लेकर चर्चा हो रही है.

चुनावी शंखनाद के बाद सत्ता बचाने व पाने का संघर्ष शुरू

पश्चिम बंगाल, उड़िसा, केरल , तमिलनाडु और पुडुचेरी विधानसभा चुनाव घोषित होने के बाद समीकरणों को साधने के साथ-साथ आया राम गया राम नेताओं को अपनाने का खेल आरंभ हो गया है. चर्चा है कि दक्षिण के राज्यों में भाजपाई रणनीतिकार दूसरे पक्ष के नाराज नेताओं पर नजर लगाए हुए हैं तो असम व पश्चिम बंगाल में सत्ताधारी दल के बागी नेताओं पर कांग्रेस की नजर है. जबकि पांचों राज्यों की खामोश चुनावी मिजाज ने अभी सभी दलों को परेशान कर दिया है. कहीं नाराजगी स्थानीय प्रशासन से है तो कहीं स्थानीय नेताओं से. इतना ही नहीं इन पांचों राज्यों के चुनाव में भाषा, संस्कृति, सभ्यता , स्थानीयता , चुनावी रैली व परिणाम पर सबसे ज्यादा प्रभावी ढंग से हावी है. इन सबके बीच भाजपा अपने लिए दक्षिण का द्वार खोलने की फिराक में है जबकि कांग्रेस उत्तर पूर्व में अपनी खोई जमीन हासिल करने की रणनीति पर काम कर रही है.

बिहार में सत्ता हस्तांतरण की योजना में रोज आ रहा है नया मोड़

राज्यसभा चुनाव में बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के विजयी होने के बाद भी अभी यह स्पष्ट नहीं हो पा रहा है कि मुख्यमंत्री की कुर्सी पर जदयू का कब्जा बरकरार रहेगा या भाजपा की अगुवाई में राजग सरकार बनेगी. नीतीश कुमार जिस तरह से अभी भी प्रदेश की राजनीति व सरकारी कामकाज में सक्रिय हैं उसको देखकर कुछ भी कहना जल्दबाजी होगी. चर्चा है कि जदयू की ओर से मुख्यमंत्री पद अपने पास रखने का नया प्रस्ताव रखा गया है इतना ही नहीं यदि मुख्यमंत्री पद भाजपा लेती है तो उसे जदयू के पसंदीदा नेता को कुर्सी सौंपनी होगी. चर्चा यह भी है कि जदयू ने कहा है कि जो मंत्रालय भाजपा के पास है वह सभी मंत्रालय संख्या के साथ जदयू को मिले और जदयू के पास जो है उसे भाजपा अपने नेताओं को दे. हालांकि अभी 10 अप्रैल के बाद ही सत्ता हस्तांतरण का असली स्वरूप सामने आएगा.

तमाम दावों के बावजूद तेल व गैस को लेकर चिंता बढ़ी

संसद के बजट सत्र के दूसरे चरण के बीच संसद के गलियारों में इन दिनों सबसे ज्यादा चर्चा ईरान व अमेरिका युद्ध और उसके कारण तेल व गैस की संभावित कमी को लेकर मची घबराहट की हो रही है. हालांकि सरकार की ओर किसी प्रकार की कमी से इंकार किया जा रहा है लेकिन सांसदों के बीच जिस तरह की गुफ्तगू हो रही है उसको देखकर कुछ और ही लग रहा है. त्योहारी सीजन, शादी समारोह का मुख्य समय होने के कारण लगभग हरेक क्षेत्र के सांसद अपने अपने क्षेत्र के लोगों की मांग और आपूर्ति के बीच समन्वय स्थापित करने के प्रयास में लगे हैं. संभावित समस्या से छुटकारा पाने के लिए विपक्षी सदस्यों के अलावा कोई सत्ता पक्ष के सांसद भी दबे जुबान से अपनी परेशानी साझा कर रहे हैं.

आठ निलंबित सांसदों को मिली राहत

बजट सत्र के आरंभिक चरण में ही अमर्यादित व्यवहार को आधार बनाकर निलंबित किए गए आठ सांसदों का निलंबन लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला द्वारा सर्वदलीय बैठक में बनी सहमति के बाद लिया गया. वैसे पिछले एक माह से प्रत्येक दिन संसद के मकर द्वार पर होर्डिंग व पोस्टर के साथ सभी निलंबित सांसद बैठ रहे थे. इनके साथ समय समय पर नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी समेत इंडिया गठबंधन में शामिल दलों के तमाम वरिष्ठ नेता भी बैठकर हौसला-अफजाई कर रहे थे. लेकिन आज के निर्णय के बाद मकर द्वार पर न तो विपक्षी दलों के नेताओं की भीड़ दिखी और न ही सत्ताधारी दलों के नेताओं द्वारा चुटकियां ली गई.

ईरान को हराना इतना आसान नहीं

अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप को अब एहसास हो रहा होगा कि वेनेजुएला के समान ईरान पर काबू नहीं पाया जा सकता. वह ऐसे शत्रु से लड़ रहे हैं जिसने अनेक वर्षों से युद्ध की मजबूत तैयारी कर रखी थी. ईरान के प्रक्षेपास्त्रों और इंटरसेप्टर ने खाड़ी देशों में स्थित अमेरिकी सैनिक अड्डों को निर्षक्रय बनाकर रख दिया है. पिछले 3 दशक से ईरान ने योजना बना रखी थी कि यदि अमेरिका ने उसके खिलाफ युद्ध छेड़ा तो सुन्नी अरब देशों के अमेरिकी फौजी ठिकाने उसके निशाने पर होंगे. इसीलिए 17 दिनों की लड़ाई के बाद भी ईरान कमजोर नहीं पड़ा. ईराक ने होर्मुज की खाड़ी में जहाजों को रोककर अरब देशों के लिए आर्थिक संकट उत्पन्न कर दिया क्योंकि उनकी सारी कमाई तेल बेचने से होती है. हमलों की वजह से इन देशों को तेल प्रोडक्शन भी रोकना पड़ा है. अमेरिका के रक्षा सचिव का दावा है कि ईरान से युद्ध अंतिम पड़ाव पर है क्योंकि उसके शस्त्रास्त्र खत्म होते जा रहे हैं. दूसरी ओर ईरान ने पहले छोटे मिसाइलों व ड्रोन का इस्तेमाल किया लेकिन अब वह अपने ज्यादा घातक हथियारों का उपयोग कर रहा है जो उसने रिजर्व स्टॉक में रखे थे. इससे अमेरिका आश्चर्य में पड़ गया है. ईरान के जवाबी हमले से इजराइल को भी काफी नुकसान हो रहा है. इजराइल के कहने पर इस युद्ध में कूदने वाले अमेरिका को प्रतिदिन 3 अरब डॉलर खर्च करने पड़ रहे हैं. यह व्यय निरंतर बढ़ता जा रहा है. इसके अलावा अरब राष्ट्रों में उसके सैनिक अड्डे भी तबाह हो रहे हैं. ईरान ने यूएई व सऊदी अरब में सस्ते ड्रोन से हमले किए जिससे निपटने के लिए अमेरिका को काफी महंगे इंटरसेप्टर का इस्तेमाल करना पड़ा. ईरान ने दिखा दिया कि युद्ध के लिए वह अग्रिम रूप से तैयार था. अब ट्रंप प्रशासन कह रहा है कि उसने अपना काम पूरा कर लिया है और शीघ्र ही युद्ध समाप्त हो जाएगा. अमेरिका यह भी प्रचार कर रहा है कि ईरान जल्द ही आत्मसमर्पण करने वाला है लेकिन यह युद्ध तीसरे सप्ताह में प्रवेश कर चुका है और इसके खत्म होने के आसार नजर नहीं आते.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

कथा करवाई, नहीं दी दक्षिणा कथावाचक को देना पड़ा धरना

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, खबर है कि छत्तीसगढ़ के पर्यटन मंत्री राजेश अग्रवाल ने अपने यहां भागवत कथा का आयोजन तो करवा लिया लेकिन इसके बाद कथावाचक रामानुरागी महाराज को दक्षिणा नहीं दी. जब वह पैसे मांगने जाते हैं उन्हें धक्के मारकर भगा दिया जाता है. इससे दुखी होकर रामानुरागी महाराज विधानसभा के सामने धरने पर बैठ गए. उन्होंने सरकार और प्रशासन से उचित कार्रवाई की मांग की है और न्याय नहीं मिलने पर आत्मदाह की धमकी दी है.'

हमने कहा, 'जब उनका नाम रामानुरागी है तो भगवान राम के प्रति अनुराग या प्रेम बनाए रखें. दक्षिणा की रकम को लेकर इतना मोह क्यों होना चाहिए? भागवत कथा तो ज्ञान, वैराग्य और भक्ति की सीख देती है. उसे महाराज खुद जीवन में उतारें. जो मिल गया वह हरि इच्छा, जो नहीं मिला उसे भूल जाएं. शुकदेव ने राजा परीक्षित को भागवत कथा सुनाने पर कोई दक्षिणा नहीं ली थी. उस कथा को सुनकर परीक्षित का मृत्यु भय दूर हो गया और वह सांसारिक बंधन से मुक्त हो गए.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, किसी भी धार्मिक आयोजन के बाद दक्षिणा देनी ही चाहिए अन्यथा मनोरथ सफल नहीं होता. कथा सुनने के बाद दक्षिणा देना मंत्री का कर्तव्य था. दक्षिणा का सिस्टम द्रोणाचार्य ने बनाया था. उन्होंने दक्षिणा में एकलव्य का अंगूठा मांग लिया था तब एकलव्य ने तुरंत अंगूठा काटकर गुरु को दे दिया था. प्रेमपूर्वक और यथाशक्ति दक्षिणा देनी चाहिए.'

हमने कहा, 'यह समय आज नगद कल उधार का है. पंडित को एडवांस में रकम ले लेनी चाहिए थी, क्योंकि मंत्री के वादे या आश्वासन का कोई भरोसा नहीं रहता. त्याग, वैराग्य की सीख देने वाले किसी नामी कथावाचक के पास जाकर पूछो कि महाराज भागवत कथा करानी है तो वह पूछेगा कि यजमान, आपका बजट कितने लाख का है? पंडाल कैसा रहेगा. मंच की सजावट कैसी होगी? कितने लोग सुनने आएंगे? चढ़ावा कितना आएगा? क्या टीवी चैनल पर प्रसारण की व्यवस्था की है? आप इस आयोजन से कितना कमाओगे? हमारी भजन मंडली और हमें कितनी रकम मिलेगी? चलिए एडवांस निकालिए फिर आपको तारीख देंगे. यह कलियुग की कथा है. इसमें आप भी कमाइए, हम भी कमाएंगे !'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12201

- डॉ. सागर खादीवाला

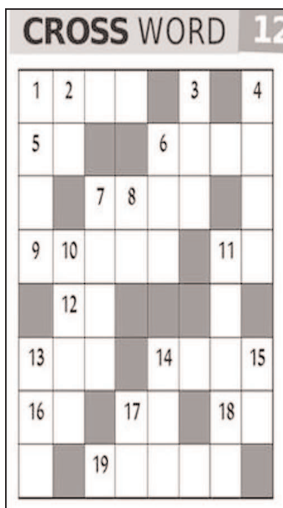

बाएं से दाएं

1. बहता हुआ (सं.) 5. दूल्हा, देवता आदि से मांगा हुआ मनोरथ 6. खाट 7. रेडियो या दूरदर्शन से कार्यक्रम का प्रस्तुतीकरण, फैलाना 9. फिर से नया कर देना, जिसकी अवधि समाप्त हो चुकी हो उसे फिर से आगे के लिए वैध या नियमित करना 11. आभास, ज्ञान, प्रकाश 12. गीला, आर्द्र, ठंडा (उर्दू) 13. हिंदुओं के अठारह धार्मिक आख्यान जिनकी रचना वेद व्यास ने की थी, पुरातन 14. दिक्कत, कठिनाई 16. संसार 17. दली हुई अरहर-मूंग आदि 18. बोध, जानना 19. आवाजाही, आम-दरफ्त

ऊपर से नीचे

1. धर्मोपदेश करना, अर्थ समझाते हुए कहना 2. सप्ताह का दिन, आघात 3. सबब, वजह 4. छल कपट या अनाचार करने वाला अधर्मी, अविश्वसनीय (उर्दू) 6. कीर्ति गायक, भाट, राजस्थान की एक जाति 7. अध्याय, प्रसंग 8. तत्व, सत्त, तात्पर्य 10. जिसने सांसारिक सुखों या वस्तुओं के प्रति अनुराग या आसक्ति छोड़ दी हो, बुद्ध का एक नाम 11. वह विज्ञान जिसमें भाषा की उत्पत्ति विकास और रूप परिवर्तन आदि का विवेचन होता है 13. पूजा जाना, सम्मानित होना 14. पृथक, जुदा 15. शालि जिसमें से चावल निकलता है 17. किसी वस्तु पर अपना हक जतलाना मुकदमा

Solution 12200

बा	म		पु	र	अ	म	न
लि	हा	फ		क्ष		र	त
का	ज	ल		क		म्म	
	न	क	ली		ग	त	
अ			ल	क	वा		पा
ल	प	क	ना		क्ष	त्रि	य
क्त		छा		व		का	ल
क	टा	र		न	क	ल	

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में निर्धारित कार्यों में आकस्मिक रूकावट आयेंगी, व्यर्थ वाद विवाद हो सकता है, व्यय में वृद्धि होगी, मानसिक अशांति रहेगी, वर्ष के मध्य में शासन से लाभ प्राप्त होगा, व्यक्तित्व का विकास होगा, सामाजिककार्यो में ख्याति प्राप्त होगी, वर्ष के अन्त में भागदौड़ से सफलता प्राप्त होगी, आर्थिक कार्यों में लाभ प्राप्त होगा.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को पूर्व निर्धारित कार्यो में आकस्मिक रूकावट आयेगी, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को व्यर्थ विवाद होगा, कर्क राशि के व्यक्तियों को शासन से लाभ प्राप्त होगा, तथा व्यक्तिगत संबंधों में मनमुटाव हो सकता है, सिंह राशि के व्यक्तियों को यात्रा आदि से सतर्कता बांछनीय, सामाजिक कार्यो में ख्याति प्राप्त होगी, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को परिश्रम की अधिकता रहेगी, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियोंको प्रतिस्पर्धा में सफलता मिलेगी. मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों की आर्थिक उन्नति होगी, सफलता मिलेगी.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक निडर साहसी, महत्वाकांक्षी, परिश्रमी, एवं व्यक्तित्ववान होगा, बचपन में स्वास्थ्य नरम गरम रहेगा, अस्थिर बुद्धि का होने से उटपटांग बातें करेगा, विद्या प्रारंभ में कम एवं बाद में अच्छी होगी, मित्रों से धोखा खाने के बाद सीख मिलेगी, माता पिता का आदर करेगा.

मेष- सहयोग से बिखरे कार्य समेटने में मदद मिलेगी, राजकीय मामले में पक्ष मजबूत होगा. यश मान-सम्मान मिलेगा, जीवन सुखद रहेगा.

वृषभ- सूझबूझ से आगे बढ़ें, सफलता मिलेगी, युवाओं को कैरियर में नये अवसर मिलेंगे, राजकीय कार्यो में सफलता मिलेगी, अधिकारी वर्ग का सहयोग रहेगा.

मिथुन- कार्य स्थल पर सबकी जबावदेही तय करें, नई योजना की शुरूआत में परेशानी होगी, दाम्पत्य सुख में वृद्धि होगी, महिला जाति की सलाह उपयोगी होगी.

कर्क- सुख में वृद्धि होगी, सोचसमझकर निवेश करें, दिनचर्या अनियमित रहेगी, मित्रता उपयोगी रहेगी, खानपान पर ध्यान दें, विवाद को टालना हितकर रहेगा.

सिंह- सहूलियत के हिसाब से कार्य में बदलाव होगा, सोचे हुये कार्य में सफलता मिलेगी, आय से अधिक व्यय होगा, नौकरी के कार्यो में व्यस्तता रहेगी.

कन्या- मित्रों के रूखे व्यवहार से खिन्नता होगी, वाणी पर संयम रखें. नौकरी के कार्यो में अधिकता रहेगी, पूज्य व्यक्ति की सलाह उपयोगी रहेगी.

तुला- अपने पक्ष को आत्म विश्वास के साथ रखें, जमकर जायजाद प्रापर्टी के कार्यों में सफलता मिलेगी, नये लोगों, के साथ संबंधों में मधुरता, स्वास्थ्य कष्ट दूर होगा.

वृश्चिक- स्वास्थ्य में सुधार होगा, साझेदारी में कोई बड़ी योजना बनेगी, वाहन चलाते समय सावधानी रखें, आकस्मिक धन लाभ होगा, शुभ संदेश मिलेगा.

धनु- कानूनी मामलों में सावधानी से निर्णय लेने की जरूरत है, खोया आत्म विश्वास फिर से प्राप्त होगा, शिक्षा के क्षेत्र में सफलता मिलेगी, मन में संतोष बना रहेगा.

मकर- जोखिम के कार्यो में रूचि बढ़ेगी, समय पर वादा पूरा नहीं करने का मलाल रहेगा, बुद्धिमानी एवं सूझबझ से बिगड़ा काम बनेगा, व्यापार व्यवसाय अनुकूल रहेगा.

कुम्भ- बीती बातों को भूलकर निजी संबंधों को सुधारें, सामाजिक जीवन में सम्मान मिलेगा, पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा.

मीन- सपने साकार करने का समय है, प्रतियोगी परीक्षा में सफलता मिलेगी, व्यर्थ के तनाव से बचें, पद प्रतिष्ठा एवं सम्मान मिलेगा, निजी पुरूषार्थ से लाभ होगा,

उदयकालीन ग्रह चाल

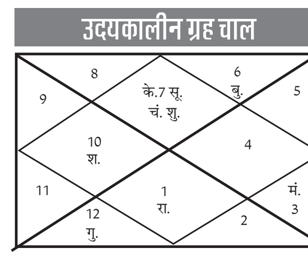

पंचांग

रा.मि. 27 संवत् 2082 चैत्र कृष्ण चर्तुदशी बुधवासरे दिन 7/30, पूर्वाभाद्रपद नक्षत्रे रातअंत 5/13, शुभ योगे रात 4/4, शकुनि करणे सू.उ. 6/2, सू.अ. 5/58, चन्द्रचार कुम्भ रात 11/16 से मीन, शु.रा. 11, 1, 2, 5, 6, 8 अ.रा. 12, 3, 4, 7, 9, 10 शुभांक- 4, 6, 0.

व्यापार भविष्य

चैत्र कृष्ण चर्तुदशी को पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र के प्रभाव से सोना, चांदी, के भाव में 30 से 40 रूपये की मंदी होगी, धान्यों के भाव में अस्थिरता रहेगी, रूई, कपास, सूत, वस्त्र, पाट, जूट, बारदाना, के भाव में मंदी होगी, भाग्यांक 3441 है.

SUDOKU 7333

		8				1	5	
2					1	8		
3			4		6	7		9
5					9			
	9		2	3	4		7	
			1					8
4		7	6		5			1
		6	7					4
	5	3				2		

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7332

3	9	7	5	2	1	4	8	6
5	4	2	9	6	8	7	1	3
8	6	1	3	7	4	9	5	2
2	8	9	1	5	3	6	4	7
4	7	3	2	8	6	5	9	1
6	1	5	4	9	7	2	3	8
9	3	4	7	1	2	8	6	5
7	5	6	8	3	9	1	2	4
1	2	8	6	4	5	3	7	9